59

# मेमने के विवाह का भोज

## ( 19:7-10 )

इस पाठ को तैयार करते समय मुझे डाक में एक खुदा हुआ निमन्त्रण मिला। इसमें लिखा था:

*श्री व श्रीमती डेविड एल. रोपर की सपुत्री*
*एंजला केय रोपर*
*और श्री व श्रीमती बैरी लवजॉय के सुपुत्र*
*डैन हैरिस लवजॉय*
*अपने मिलन के लिए परमेश्वर की महिमा हेतु*
*और एक-दूसरे के साथ विवाह की शपथ लेने के लिए*
*शनिवार बारह दिसंबर के दिन*
*हमारे प्रभु के वर्ष उन्नीस सौ अठानवे के दिन*
*आपके दर्शन के सम्मान के अभिलाषी हैं ...*

जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, यह निमन्त्रण मुझे बहुत प्रिय है। ऐसे निमन्त्रण का अर्थ आनन्द करना, आशा करना और पूरा होना है। ऐसा ही निमन्त्रण प्रकाशितवाक्य 19 में मिलता है, वह भी विवाह का निमन्त्रण ही है, परन्तु वह कहीं अधिक मूल्यवान है।

हमारा पिछला पाठ अध्याया 19 के ''हैलेलुय्याह!'' गीत पर केन्द्रित था। मैंने जान-बूझकर आयत 6 से उस पाठ को समाप्त कर दिया, परन्तु गीत आयत 7 में जारी रहता है: ''आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें; क्योंकि मेम्ने का ब्याह आ पहुंचा: और उसकी पत्नी ने अपने आपको तैयार कर लिया है।'' (मेमने के विवाह के भोज का चित्र देखें) । विवाह का विषय अगली दो आयतों तक जारी रहता है। 8 और 9 आयतें पढ़ते हुए इस निमन्त्रण पर विशेष ध्यान दें:

> और उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया, क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम है। और उसने मुझ से कहा; यह लिख, कि धन्य वे हैं, जो मेम्ने के ब्याह के भोज में बुलाए गए हैं; ...

बाद में प्रकाशितवाक्य के अपने चरम पर पहुंचने पर हम ''नये यरूशलेम'' को ''स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते'' देखते हैं जो ''उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिए श्रृंगार किए हो'' (21:2)।[1] ''नये यरूशलेम'' को ''दुल्हिन अर्थात मेमने की पत्नी'' (21:9) कहा जाएगा।

विवाह के इस रूपक का क्या महत्व है? मेमने और उसकी दुल्हन का विवाह कब होगा। विवाह का भोज क्या है और निमन्त्रण किन लोगों को भेजे गए है? हमारे लिए इसका क्या अर्थ है? इस पाठ में हम इस और दूसरे प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करेंगे। हमारा उद्देश्य हर किसी को यह कहने के लिए प्रोत्साहित करना है कि ''मेमने के साथ मेरा क्या सम्बन्ध है?''; ''क्या मैं उसके लौटने के लिए तैयार हूं?''

## विषय

प्रकाशिताक्य 19:7-9 में ''पुराने नियम के विचार के कम से कम तीन सूत पिरोए गए हैं, जिनमें से हर एक का इस्तेमाल पहले मसीही साहित्य में हुआ है, परन्तु अकेले संदर्भ में नहीं।''[2]

पहला तो परमेश्वर और मनुष्यजाति के बीच सम्बन्ध दिखाने के लिए विवाह का संकेत है। पुराने नियम में इस्राएल को परमेश्वर से विवाहित दिखाया गया था (यशायाह 50:1; यिर्मयाह 2:32; होशे 2:19, 20)।[3] नये नियम में यह रूपक दोहराया गया है।[4] विवाह काप्रतीक सुसमाचार के सभी विवरणों में है। हम दूल्हे औरउ बारातियों (मत्ती 9:15; 25:1; मरकुस 2:19; यूहन्ना 3:29) के साथ-साथ विवाह के भोज और विवाह के वस्त्रों के बारे में पढ़ते हैं (मत्ती 22:2, 11, 12; लूका 12:35, 36 भी देखें)।

पौलुस ने आमतौर पर कलीसिया को मसीह की दुल्हन कहा। उसने कुरिन्थुस की कलीसिया को बताया, ''मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंआरी की नाई मसीह को सौंप दूं'' (2 कुरिन्थियों 11:2)। रोम के मसीही लोगों को उसने बताया कि वे ''व्यवस्था के लिए'' मर चुके थे ताकि वे ''उस दूसरे के हो जाएं जो मरे हुओं में ससे जी उठा'' (रोमियों 7:4)। इस विषय पर पौलुस का सबसे चौकाने वाला वचन इफिसुस की कलीसिया के नाम उसके पत्र में मिलता है:

> हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया। कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए। और उसे एक ऐसी जेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस मे न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, बरन पवित्र और निर्दोष हो।... इस कारण मनुष्य माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से गिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे। यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूं (इफिसियों 5:25-32)।

कोई मानवीय बन्धन इतना निकट या गहरा नहीं है जितना विवाह का सम्बन्ध। विवाह में जा कुछ होना चाहिए और जो हो सकता है उस सब पर विचार करें। मसीह और उसकी कलीसिया के सम्बन्ध में यह और इससे भी अधिक आवश्यक है।

दूसरा सूत भोजन या भोज है, जिसे संगति और आनन्द के रूपक के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। पुराने नियम में इस रूपक का इस्तेमाल मसीहियत की आशिषों की विश्वव्यापकता की भविष्यवाणी करने के लिए किया जाता था: ''सेनाओं का यहोवा इसी पर्वत पर सब देशों के लोगों के लिए ऐसी जेवनार करेगा जिस में भांति भांति का चिकना भोजन और निथरा हुआ दाखमधु होगा; ... वह मृत्यु को सदा के लिए नाश करेगा, और प्रभु यहोवा सभों के मुख पर से आंसू पोंछ डालेगा'' (यशायाह 25:6-8क)। यीशु ने ऐसी ही शब्दावली का इस्तेमाल किया जब उसने कहा कि ''पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्खिन से लोग आकर परमेश्वर के राज्य के भोज में भागी होंगे'' (लूका 13:29)।[5]

भोजन खाने से बढ़कर कुछ बातें आम होती हैं। तौ भी जब विशेष अवसर हो तो जश्न का अनिवार्य भाग दूसरों के साथ खाने के लिए बैठना होता है।

तीसरा सूत कपड़े पर व्यवहार में परिवर्तन को दिखाने के लिए कपड़े पहनने का रूपक है (उत्पत्ति 35:2; यशायाह 52:1; 61:10; जकर्याह 3:4)। पौलुस मसीही लोगों से आमतौर पर पापपूर्ण ढंगों को ''उतारने'' और धार्मिकता को ''पहनने'' को कहता था (रोमियों 13:12, 14; इफीसियों 4:22, 24; कुलुस्सियों 3:8-10)।

## पृष्ठभूमि

यह समझने के लिए कि विवाह, भोज और वस्त्रों के तीनों रूपक प्रकाशितवाक्य 19 में किस प्रकार मिल जाते हैं, हमें यहूदियों के विवाह की परम्पराओं को समझाना आवश्यक है। कई प्रकार से उनकी रीतियां हमारी रीतियों जैसी ही थीं; अन्य प्रकार से उनकी रीतियां अलग थीं।[6]

यहूदी विवाह की प्रक्रिया सगाई के साथ आरम्भ होती थी।[7] यह सगाई हमारी मंगनी की तरह की होती थी, परन्तु इससे अधिक पक्की होती थी। किसी स्त्री की एक बार किसी पुरुष से सगाई होने पर उसे उसकी पत्नी ही माना जाता था चाहे विवाह का समारोह न भी हुआ हो और विवाह पूर्ण न हुआ हो (देखें उत्पत्ति 29:21)। उससे अपने पति की वफ़ादार होने की उम्मीद की जाती थी (व्यवस्थाविवरण 22:23, 24)। यह सम्बन्ध मरने या तलाक होने पर ही टूटता था।

सम्भवतया इसका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण मरियम और यूसुफ की मंगनी है। ''मरियम की *मंगनी* यूसुफ के साथ हो गई, तो *उनके इकट्ठे होने से पहिले* वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई'' (मत्ती 1:18)। यूसुफ उसे तलाक देने की सोच रहा था (आयत 19); परन्तु स्वर्गदूत ने उसे दर्शन देकर कहा, ''हे यूसुफ! दाऊद की संतान तू अपनी पत्नी मरियम को यहां लाने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है'' (आयत 20)। यूसुफ ''प्रभु के दूत की आज्ञा के अनुसार अपनी पत्नी को अपने

यहां ले आया'' (आयत 24)। मूलत: आयत 20 में यूसुफ को ''*अपनी पत्नी* मरियम को लाने'' के लिए कहा गया था और आयत 24 में, वह ''*अपनी पत्नी* को ले आया'' है।[8] मरियम मंगनी के एकदम बाद यूसुफ की पत्नी बन गई थी, चाहे उनके विवाह का समारोह नहीं हुआ था।

मंगनी का समय परिस्थितियों के अनुसार लम्बा भी हो सकता था और छोटा भी।[9] इसमें जितना भी समय लगता हो यह काल आशा, शुद्धता और तैयारी का माना जाता था। तैयारी के भाग के रूप में, दुल्हन अपने विवाह के वस्त्र तैयार करती थी। दूल्हा दहेज की अदायगी की तैयारी करता होगा (देखें उत्पत्ति 34:12)।

अन्त में विवाह का समय आ जाता था। विलियम हैंड्रिक्सन ने इन समारोहों का वर्णन किया है:

> दुल्हन तैयारी करती और श्रृंगार करती है। दूल्हा बारातियों के साथ, जो गाते और मशालें उठाते हैं, अपनी बेहतरीन पोशाक में सजे मंगेतर के घर बारात लेकर जाता है। वह दुल्हन को लेकर बारात के साथ अपने घर या अपने माता-पिता के घर आता है, ...[10]

बुलाए गए मेहमान[11] विवाह के भोज के लिए प्रसन्न दंपती के साथ मिल जाते हैं जो एक या दो सप्ताह तक चलता था। यह आनन्द करने का समय था।[12]

नये नियम में इस रूपक का इस्तेमाल यीशु और उसके अनुयायियों के बीच विशेष सम्बन्ध पर ज़ोर देने के लिए किया गया है। हमने पहले ही देखा है कि पौलुस ने कलीसिया को मसीही की दुल्हन के रूप में दिखाया। यीशु ने अपनी दुल्हन के लिए अपने ही लहू की कीमत दी थी (प्रेरितों 20:28)। एक सुन्दर पुराना गीत है, जिसका अनुवाद इस प्रकार है:

> स्वर्ग से आकर उसने उसे ढूंढ़ा
> ताकि उसे अपनी पवित्र दुल्हन बना ले,
> अपने ही लहू से उसने उसे खरीदा,
> और उसके जीवन के लिए मर गया।[13]

बपतिस्मा लेने पर हम कलीसिया का भाग बन जाते हैं (प्रेरितों 2:47; 1 कुरिन्थियों 12:13[14]), सो इस कारण दुल्हन का भाग बन जाते हैं। वर्तमान समय में हम ''सगाई'' के काल में रह रहे हैं जिसमें दूल्हे के ''हमें घर ले जाने'' की प्रतीक्षा कर रहे हैं।[15] ''पृथ्वी पर कलीसिया दो समयों अर्थात मसीही की मंगेतर परन्तु वाचा के पूरा होने की प्रतीक्षा करने ... के बीच रहती है।''[16] यीशु के साथ अब हमारा सम्बन्ध मुधर है (1 पतरस 1:8), परन्तु उसे आमने सामने देखने पर यह और भी मधुर हो जाएगा (1 यूहन्ना 3:2)। प्रतीक्षा के हमारे समय को आशा, शुद्धता और तैयारी के समय से मिलाया जा सकता है।

एक न एक दिन यीशु उन सब के लिए वापस आएगा, जो अपनी मन्नतों में विश्वासी

रहे। उसने अपने चेलों को बताया, ''मैं ... फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो'' (यूहन्ना 14:3)। दुल्हन को लेने दूल्हा ''अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएंगे'' (मत्ती 25:31)। फिर जो तैयार होंगे वे ''... बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:17)।

आप चाहें तो विवाह के जश्न का हमारा समय एक सप्ताह, दो सप्ताह नहीं बल्कि अनन्तकाल तक होगा। प्रभु हमारे साथ रहेगा और हम उसके लोग होंगे। ''... और वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं'' (प्रकाशितवाक्य 21:3, 4)!

क्या यह वर्तमान में मिलने वाले आत्मिक सम्बन्ध की और उस सम्बन्ध की, जिसे हम अनन्तकाल में पाना चाहते हैं एक सुन्दर तस्वीर नहीं है?

## आनन्द (19:7क)

प्रकाशितवाक्य 19:7-10 का मुख्य ज़ोर यही है, परन्तु उस वचन में और भी बातें हैं जिन पर हमें विचार करना चाहिए और ऐसे विचार है जिनको विस्तार दिया जाना आवश्यक है। आइए उन वचनों में देखते हैं।

फिर से परमेश्वर की महिमा गती जयवन्त भीड़ की कल्पना करें। पहले उन्होंने परमेश्वर की उस सब के लिए महिमा की जो उसने किया था (आयतें 1-4)। फिर उन्होंने उसकी महिमा उन कामों के लिए की जो वह कर रहा था (आयतें 5, 6)। अन्त में (यहां वचन का हमारा भाग आरम्भ होता है) उन्होंने उसकी महिमा उस सबके लिए की जो करने की उसने प्रतिज्ञा की थी: ''आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें; क्योंकि मेम्ने का ब्याह आ पहुंचा'' (आयत 7क)।

अनुवादित क्रियाएं ''आनन्दित'' और ''मगन हों'' नये नियम में केवल एक और जगह मत्ती 5:12 में इकट्ठी मिलती हैं: ''आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिए कि उन्होंने उन भविष्यवक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था।'' दो आयतें मुख्यतया वही बात कहती हैं: समय कठिन हो सकता है; दिन अन्धकार भरे हो सकते हैं; तुम्हारी गलों पर आंसू टपक सकते हैं, परन्तु एक बेहतर दिन आने वाला है। प्रभु अपनों के लिए ही आ रहा है! ''मेमने का ब्याह आ पहुंचा है'' ''स्वर्ग में बड़ा फल'' में समानता है!

विवाह की रीतियां समय-समय और जगह-जगह पर अलग-अलग होती हैं, परन्तु सब में आनन्द की भावना अवश्य होती है। मेरा ध्यान कई साल पहले ऑस्ट्रलिया में जाता है, जहां कई युवतियां चिकन डिनर से अपने ''चिकन की छाती की हड्डियां'' बचा लेती थीं ताकि वे अपने विवाह के जश्न में समय मेज़ पर उन्हें रख सकें। कई साल पहले तुर्की का एक दृश्य ध्यान में आता है, जिसमें एक बड़े से ट्रक के पीछे दुल्हन, दुल्हन के परिवार और दुल्हन के सामान का बड़ा ढेर दूल्हे के घर जा रहा था। इससे भी नई बात रोमानिया

के ब्रासोव नगर के केन्द्र में होने वाली विवाह की (दुल्हनों के श्वेत विवाह के वस्त्रों के साथ) यहां-वहां फैली पार्टियों का स्मरण है। जितने भी दृश्यों की बात मैंने की है उनके एक बात मिलती-जुलती है कि लोग मुस्कुरा रहे थे, लोग प्रसन्न थे और लोग आनन्द कर रहे थे।

इसी प्रकार अपनी दुल्हन को लेने के लिए प्रभु के लौटने के समय आनन्द करने का समय होगा। यानी यह उसकी वापसी के लिए तैयार रहने वालों के लिए आनन्द करने का समय होगा।

## तैयारी (19:7ख, 8)

इससे हम आयत 7 के अन्तिम भाग में आ गए हैं, जो भीड़ द्वारा गाये जाने वाले गीत ''और उसकी पत्नी ने अपने आपको तैयार कर लिया है'' (आयत 7ख) का अन्त है।

यदि आप किसी विवाह की तैयारी में शामिल हुए हों तो आपको पता होगा कि बहुत काम करना पड़ता है।[17] वचन का हमारा भाग उस तैयारी के एक पहलू अर्थात विवाह के वस्त्र उपलब्ध कराने पर फोकस करता है: ''और उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया, क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम है''[18] (आयत 8)। स्त्रियों में विवाह की चर्चा होने पर एक प्रश्न अवश्य पूछा जाता है ''दुल्हन का लिबास कैसा लग रहा था?'' इस केस में उत्तर होगा ''शुद्ध और चमकदार महीन मलमल।''

यह चमकदार, अर्थात शुद्ध मलमल शुद्धता का प्रतीक है।[19] पौलुस ने कहा:

> ... मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया। कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए। और उसे एक ऐसी जेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस मे न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, बरन पवित्र और निर्दोष हो (इफिसियों 5:25-27)।

पानी में डुबोए जाने (अर्थात बपतिस्मा लेने) से यीशु का लहू हमारे पापों को धोता है (प्रेरितों 22:16)। हमारे ''जीवन के वस्त्र'' लहू में सफेद किए जाते हैं (प्रकाशितवाक्य 7:9, 14); यानी हमें ऐसा लिबास पहनाया जाता है जो स्वयं मसीह है (गलातियों 3:27)। फिर हमें वचन के प्रकाश में लगातार चलना होता है ताकि यीशु का लहू में शुद्ध करता रहे (1 यूहन्ना 1:7)। हमें अपने आपको दूल्हे के लिए शुद्ध रखना होता है यानी हमें उसके वफादार रहना है।

आयत 8 हमारे उद्धार में परमेश्वर के योगदान और हमारे योगदान के दो विचारों को मिला देता है। परमेश्वर का योगदान ''उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहनने का *अधिकार दिया गया*''[20] शब्दों से प्रकाश में लाया जाता है। ''दिया गया'' वाक्यांश का इस्तेमाल यह ज़ोर देने के लिए कि नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है, पूरे प्रकाशितवाक्य में हुआ है (6:2, 8; 13:7, 14; 16:8)। अपनी सामर्थ से अपने ''वस्त्र'' धोने का कोई

तरीका नहीं है इसलिए हमें परमेश्वर की दया पर निर्भर रहना आवश्यक है। लहू के साफ करने वाले तत्व के बिना हमारे जीवन ''मैले चिथड़ों के समान हैं'' (यशायाह 64:6)। प्रभु हमें धोए जाने के साधन, अवसर और सामर्थ देता है और फिर हम पर अपने अनुग्रह से क्षमा देता है। इसलिए आइए ''हम आनन्दित और मगन हों *और उसकी स्तुति करें*'' (आयत 7क)।

इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें अपनी ओर से प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। अपने उद्धार के लिए हमारा योगदान आयत 8 के इन शब्दों से प्रकाश में लाया जाता है: ''क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ *पवित्र लोगों के धर्म के काम*[21] है।'' राबर्ट माउंस ने कहा कि यह वाक्य रचना ''इस बात का संकेत हो सकती है कि दुल्हन का वस्त्र अन्त तक सहकर विश्वासपूर्ण आज्ञाकारिता के असंख्य कामों से बुना गया है।''[22] एच. एल. एलिसन ने इसे नये नियम की ''सबसे सुन्दर तस्वीरों में से एक'' के रूप में वर्णित किया है:

> दिखाई गई तस्वीर स्वर्ग में एक बड़े करघे की है; धर्म का हर काम अर्थात मसीह में हमारे धार्मिक होने से किया गया हर कार्य, एक स्वर्गदूत जुलाहे तक ले जाया जाता है, जो इसे दुल्हन के नहीं, दूल्हे की महिमा के लिए विवाह के वस्त्र की सामग्री में मिला देता है।[23]

हैनरी स्वेट ने लिखा है कि ''पूरी कलीसिया सामूहिक शुद्धता के चमचमाते सफेदपन ओढ़े हुए दिखाई देती है।''[24]

आज विद्वानों को उद्धार में परमेश्वर के योगदान वाली आयतों और उन आयतों की समझ नहीं आती जो मनुष्य के योगदान की बात करती हैं। कई बाइबलों में ऐसा कहा गया लगता है कि हमारे उद्धार के सम्बन्ध में परमेश्वर सब कुछ करता है, जबकि अन्यों की व्याख्या (वास्तव में गलत व्याख्या) यह अर्थ निकालने के लिए की जा सकती है कि सब कुछ मनुष्य ही करता है। जितना हम इस स्पष्ट विवाद पर चिंतित हैं इतना आरम्भिक लेखक नहीं होंगे। वे परमेश्वर के योगदान की महिमा करते थे, क्योंकि उसके बिना उद्धार हो ही नहीं सकता। इसके साथ ही उन्होंने यह स्पष्ट करदिया कि हर व्यक्ति स्वयं निर्णय लेता है कि परमेश्वर के उद्धार को स्वीकार करना है या नहीं। बर्टन कॉफ़मैन ने इसे इस प्रकार लिखा है: ''परमेश्वर ने [दुल्हन को] वस्त्र दे दिए, परन्तु *पहनने* तो उसी ने थे!''[25]

हम दूल्हे के आने की तैयारी कैसे करते हैं? हम विश्वास और बपतिस्मे के द्वारा मसीही की दुल्हन का भाग बनते हैं और फिर अपने आप को ''संसार से निष्कलंक'' रखते हैं (याकूब 1:27)। यूहन्ना ने कहा:

> हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की सन्ता है, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है
> (1 यूहन्ना 3:2, 3)।

पौलुस ने लिखा, ''सो हे प्यारो जब कि ये प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें'' (2 कुरिन्थियों 7:1)। पतरस ने अपनी दूसरी पत्री में यही बात कही (2 पतरस 3:14)।

कोई पुरुष किसी स्त्री को जो सबसे बड़ा सम्मान उसे अपनी दुल्हन बनने के लिए कहकर दे सकता है। यीशु ने वह सम्मान हमें दिया है! आइए हम उस सम्मान को समझकर उसके लिए धन्यवाद दें यानी हम अपने आचरण को प्रभु की पवित्र दुल्हन वाला बनाएं!

## निमन्त्रण (19:9क, ख)

जब यूहन्ना पवित्र लोगों के ''शुद्ध मलमल'' पर विचार कर रहा था तो कोई बोल पड़ा: ''और उसने मुझ से कहा ...'' (आयत 9क)। RSV और NIV में ''*स्वर्गदूत* ने मुझ से कहा, ...'' है। इस घटना की तुलना 22:8, 9 से करने पर ''जो'' सम्भवतया स्वर्गदूत *था,* शायद वही जिसने दर्शनों की शृंखला आरम्भ की थी (17:1)।[26] बोलने वाले ने प्रेरित से कहा, ''यह लिख,[27] कि धन्य वे हैं, जो मेमने के ब्याह के भोज में बुलाए गए हैं'' (आयत 9क)। यह प्रकाशितवाक्य का चौथा धन्य वचन है और केवल संख्या में ही नहीं बल्कि अवधारणा में भी केन्द्रीय है। स्वर्ग में विवाह के जश्न में शामिल होने से बड़ी आशीष की कल्पना नहीं की जा सकती।

''ब्याह के भोज में बुलाए गए'' लोगों के बारे में थोड़ी उलझन है, परन्तु संदर्भ से पता चलता है कि वे, वे लोग हैं, जिन्होंने प्रभु के निमन्त्रण को साकारात्मक रूप से स्वीकार किया है यानी वे विश्वासी मसीही हैं। स्नेहपूर्वक निमन्त्रण हर किसी को दिया गया है: ''और आत्मा, और दुल्हिन दोनों कहती हैं, आ; और सुनने वाला भी कहे, कि आ; और जो प्यासा हो, वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले'' (22:17)। तौ भी केवल धन्य लोग ही परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित होकर निमन्त्रण को *स्वीकार* करते हैं।[28]

उलझन इसलिए है क्योंकि हमने पहले ही ज़ोर दिया है कि दुल्हन कलीसिया के विश्वासी सदस्य है और अब हम सुझाव दे रहे हैं कि बुलाए हुए मेहमान कलीसिया के विश्वासी लोग हैं।[29] एक से अधिक लेखकों ने मज़ाक में कहा है, ''कभी किसी दुल्हन को अपने ही विवाह का निमन्त्रण मिलते सुना है?''[30] ये आलोचक अपोकलिप्टिक भाषा की तरलता को नज़रअन्दाज करते हैं। कभी भेड़ के चरवाहा बनने की बात सुनी है? तौ भी प्रकाशितवाक्य में मेमने को चरवाहा कहा गया है (7:17)। इसी प्रकार अध्याय 19 में पवित्र आत्मा पहले दुल्हन के रूप में विश्वासियों को दिखाकर मेमने के विवाह का एक पहलू प्रकट करता है, फिर मेहमानों के रूप में विश्वासियों को दिखाकर दूसरा पहलू। यह शेष नयेनियम से मेल खाता है, जो कई बार यीशु के अनुयायियों को दुल्हन के रूप में दिखाता है (देखें रोमियों 7:2-4; 2 कुरिन्थियों 11:2; इफिसियों 5:23-33) और कई बार दूल्हे के बारातियों के रूप में। (देखें मत्ती 9:15; 25:1.)

हम में से हर किसी को मेमने के विवाह में निमन्त्रण दिया गया है परन्तु इसे स्वीकार

करना या न करना हमारे ऊपर है। मुझे कई निमन्त्रण मिलते हैं जिन्हें मैं समय की कमी के कारण, स्वास्थ्य के कारण और (कई बार) दिलचस्पी न होने के कारण स्वीकार नहीं करता। कई बार मुझे किसी निमन्त्रण को स्वीकार न करने का अफसोस होता है। मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि प्रभु के विवाह के भोजन को स्वीकार न करने वाला हमेशा के लिए पछताएगा। (देखें मत्ती 22:13.)

''मेमने के विवाह का भोज'' कहलाने वाले अनन्तकालिक, स्वर्गीय जश्न में शामिल होने के निमन्त्रण से बड़ी आशीष और नहीं हो सकती। यह निमन्त्रण खुशी से स्वीकार किया जाने वाला है।

## आश्वासन (19:9ख)

अपनी बात के महत्व पर ज़ोर देने के लिए स्वर्गदूत ने फिर कहा: ''फिर उस ने मुझ से कहा, ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं''[31] (आयत 9ख)। यह दावा पूरे प्रकाशितवाक्य के बारे में किया जा सकता है,[32] और कइयों को लगता है कि 17:1 से आरम्भ होने वाले भाग का सारांश है। परन्तु बिना किसी शक के यह उस वचन के बारे में कहा गया था जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं। अविश्वासी लोग परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का ठट्ठा उड़ा सकते हैं परन्तु प्रभु चाहता है कि हम उन्हें सच मान सकते हैं!

आरम्भिक मसीहियों को ऐसे आश्वासन की आवश्यकता थी। लियोन मौरिस ने लिखा है कि आयत 8 का संदेश ''कलीसिया के लिए जिन परिस्थितियों में उसने अपने आप को पाया बड़ा प्वाइंट'' था। ''मसीही लोगों के सताव के कठिन दिनों में यह पता होना आवश्यक था कि धन्य लोग सताए जाने वाले पवित्र लोग थे न कि उनके सताने वाले।''[33] आज भी हमें इसी आवश्वासन की आवश्यकता है। माइकल विल्कोक ने लिखा है कि वचन के इस भाग से ''मसीही का पूरा दृष्टिकोण प्रभावित होना चाहिए। इससे अनुपात की उसकी भावना बहाल होनी चाहिए जिससे उसका आश्वासन, उसकी आशा, उसका आत्माविश्वास और आनन्द बहाल होगा। यह उसकी समस्याओं को *सुलझाने के योग्य* बनाता है।''[34] मुझे उसका अन्तिम शब्द अच्छा लगता है: मेमने के विवाह पर भोज पर शिक्षा हमारी किसी भी समस्या को *सुलझाने के योग्य* होनी चाहिए।

## फोकस (19:10)

7 से 9 आयतों की महान सच्चाइयां यूहन्ना पर प्रकट किए जाने के समय उसने कुछ अनापेक्षित कुछ इस महान प्रेरित के स्वभाव से मेल न खाने वाला किया: उसने कहा, ''और मैं उसको दण्डवत करने के लिए उसके पांवों पर गिरा'' (आयत 10क)।

कुछ टीकाकारों ने इस स्वीकृति को हल्का बनाने के प्रयास में काफी समय लगाया है: एक ने यह शिक्षा बनाई कि यूहन्ना ने बोलने वाले को गलती से यीशु मान लिया। एक और ने ज़ोर दिया कि वास्तव में ऐसा नहीं हुआ, यानी यह तो केवल दर्शन का भाग था। एक और ने तो यह मान लिया कि पूरी घटना ही उस स्वर्गदूत की पूजा करने वाले एशिया माइनर के

लोगों के लाभ के लिए एक पहेली है। (देखें कुलुस्सियों 2:18.) मेरा मानना है कि यह वैसा ही हुआ जैसा यूहन्ना ने कहा था और वह सब कुछ लिखने के समय जो उसने किया था यूहन्ना के गालों से सेक निकल रहा था।

परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखकों के लिए अपनी कमियां लिखना कोई नई बात नहीं थी। मूसा ने उस समय के बारे में लिखा जिसमें उसने आपा खो दिया था और इस कारण उसे कनान देश में प्रवेश करने के अवसर से हाथ धोना पड़ा (गिनती 20:1-13)। यदि (जैसा कि आरम्भिक लेखकों ने ज़ोर दिया) सुसमाचार का मरकुस का वृत्तांत सचमुच का पतरस का वृत्तांत है तो पतरस ने यीशु का इनकार करने की बात बताने में शर्म नहीं की (मरकुस 14:66-72)।

यूहन्ना का थोड़ी देर के लिए मूर्छित होना इस बात का प्रमाण है कि वह मनुष्य था और उसमें भी वे कमज़ारियां थीं जिनसे हम सब प्रभावित होते हैं। याद रखें कि प्रकाशितवाक्य 19:10 से पहले इस प्रेरित पर हर घण्टे दर्शनों की बौछार हो रही थी। मैं और आप प्रकाशितवाक्य का अध्ययन कुछ देर करने के बाद फिर आराम करते हैं; परन्तु यूहन्ना की आंखें और कान लगातार ज़बर्दस्त दर्शनों, चकित करने वाले संकेतों और अभिभूत करने वाली सच्चाइयों से भरे पड़े थे। उसकी आंखें चुंधियाती थी और उसके कानों में घण्टियां बज रही थीं। फिर परमेश्वर के वक्ता ने मेमने के विवाह के भोज की बात कही और अदभुत आश्वासन दिया कि ये बातें सच थीं। मुझे लगता है कि यूहन्ना इस सब से अभिभूत हो गया होगा। मुझे मालूम है कि मैं भी अभिभूत हो जाता हूं। परन्तु आप आश्वस्त हो सकते हैं कि यह घटना केवल यूहन्ना को परेशान करने के लिए नहीं लिखी गई थी, बल्कि परमेश्वर इससे हमें सबक सिखाना चाहता है।

बोलने वाला यूहन्ना के उसके पांवों गिरने से स्तब्ध हो गया: ''उसने मुझ से कहा; देख, ऐसा मत कर, मैं तेरा और तेरे भाइयों का संगी दास[35] हूं, जो यीशु की गवाही देने पर स्थिर है''[36] (आयत 10ख)। स्वर्गदूतों (यह मानते हुए कि बोलने वाला एक स्वर्गदूत था) और मनुष्यों में मुख्य अन्तर हैं (इब्रानियों 2:6-8), परन्तु स्वर्गदूत और विश्वासी मसीही[37] दोनों ही प्रभु के सेवक हैं (कुलुस्सियों 4:7; इब्रानियों 1:7, 14)। दोनों मे से किसी के आगे झुकना नहीं चाहिए।

इस कारण दूत ने यूहन्ना को बताया कि ''परमेश्वर ही को दण्डवत कर'' (आयत 10ग)। लगभग सत्तर साल पहले यीशु ने कहा था, ''तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर'' (मत्ती 4:10)। प्रकाशितवाक्य 19:10 का उस समय के लिए संदेश था कि मसीही लोगों को राजा कीपूजा नहीं करनी चाहिए चाहे उन पर कितना भी दबाव क्यों न पड़े।[38] हमारे लिए यह सबक है कि हमारे हृदयों और मनों में प्रभु से पहले कोई और नहीं आना चाहिए। आज भी कुछ लोग स्वर्गदूतों के सामने झुकते हैं और कुछ तो धार्मिक अगुओं के आगे भी झुकते हैं, परन्त यह आयत और 22:8, 9 कठोरतापूर्वक ऐसे कार्यों तथा व्यवहार की मनाही करती है।[39] इससे भी आम बात यह है कि हम में से कई लोग इस संसार की वस्तुओं को अपनी ''मूर्तियां'' बनने देते हैं (कुलुस्सियों 3:5)।

बाइबल स्पष्ट कहती है कि आराधना केवल *परमेश्वर* की ही होनी चाहिए (14:7; 19:5)।[40]

यह सच्चाई उस गूढ़ अर्थ वाले वाक्य के लिए आधार है, जिससे बोलने वाले ने अपनी बात खत्म की: ''क्योंकि यीशु की गवाही भविष्यवाणी की आत्मा है'' (19:10ग)। भविष्यवाणी परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई शिक्षा ही है। ''आत्मा'' शब्द का इस्तेमाल यहां सम्भवतया ''किसी के वास्तविक अर्थ या महत्व'' के लिए है ''[जैसे] *आत्मा की व्यवस्था।*''[41] इस आयत में ''आत्मा'' की जगह हम ''सार'' शब्द लगा सकते हैं।[42] आयत में ''यीशु'' शब्द पर ज़ोर है कि पमेरश्वर की प्रेरणा से दी गई शिक्षा का सार *यीशु* की ओर से और उसके बारे में गवाही है (देखें लूका 24:44; यूहन्ना 5:46)। मनुष्यों को नहीं, स्वर्गदूतों को नहीं, केवल यीशु को ऊंचा किया जाना आवश्यक है।[43]

इसलिए आइए हम परमेश्वर को दण्डवत करें, जिसने यीशु को भेजा, जिसने गवाही को प्रकट किया और जो आज हमें इस आश्वासन से रोमांचित करता है कि मेमने के विवाह का भोज आने वाला है! ''आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें; क्योंकि मेम्ने का ब्याह आ पहुंचा: और उसकी पत्नी ने अपने आपको तैयार कर लिया है'' (19:7)।

## सारांश

कइयों ने इस वचन को अक्षरश: बनाने का प्रयास किया है यानी वे स्वर्ग में सचमुच में होने वाले विवाह समारोह की कल्पना करते हैं। एक प्रचारक का मानना है कि पौलुस निकाह पढ़ेगा, क्योंकि उसने वह दूल्हे और दुल्हन को मिलाने में मुख्य भूमिका निभाई (2 कुरिन्थियों 11:2)। याद रखें कि यह भाषा सांकेतिक है। संकेत सुन्दर, रोमांचित करने वाला और प्रभावशाली है परन्तु है यह संकेत ही।

मुझे और आपको स्वर्गीय निमन्त्रण उस समय मिलता है, जब हम सुसमाचार को सुनते हैं। जब हम यीशु में विश्वास लाते है पानी में गाड़े जाते हैं तो मसीह के साथ हमारी मंगनी हो जाती है। यीशु के साथ हमारा एक नया और रोमांचित करने वाला सम्बन्ध है, जो हमसे प्रेम करता और हमें संभालता है। परन्तु हमें इससे भी अदभुत सम्बन्ध की आशा है जब वह अपनी दुल्हन को लेने आएगा।

एक दिन, यह जल्दी हो भी सकता है और नहीं भी वह दिन आ जाएगा। फिर हर कोई यीशु के न्याय के सिंहासन के सामने खड़ा होगा (20:11-15), और वह उनको जो उसके अपने हैं, पहचान लेगा। उसकी बात सुनना कितना अदभुत होगा कि ''हे मरे पिता के धन्य लोगो, आओ उस राज्य के अधिकारी हो जाओ जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया गया था'' (मत्ती 25:34)। यीशु के साथ हमारा मिलन पूरा हो जाएगा; अनन्तकाल तक चलने वाला विवाह समारोह आरम्भ हो जाएगा!

यीशु के साथ आपका क्या सम्बन्ध है? क्या आप उसकी दुल्हन अर्थात कलीसिया का भाग हैं? क्या आपने उसके लिए अपने आपको शुद्ध रखा है? यदि आप उसके आने के

लिए तैयार नहीं है तो मेरी प्रार्थना है कि आप उसके अनुग्रहपूर्वक दिए निमन्त्रण को मानने में और देर न लगाएं। भोज आपके लिए तैयार है। आ जाइए![44]

## सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस और अगले पाठ को मिलाया जा सकता है। माइलो हैडविन[45] ने वचन के दोनों भागों को ''दावत और लड़ाई'' शीर्षक से बताया। मायर पर्लमैन[46] ने ''विवाह और युद्ध'' शीर्षक इस्तेमाल किया।

टिप्पणियां

[1]इस पुस्तक में आगे ''सब कुछ नया'' पाठ में 21:2 पर टिप्पणियां देखें। [2]जी. बी. केयर्ड, *ए कमैंट्री ऑन रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* (लंदन: एडम एंड चार्ल्स ब्लैक, 1966), 234. [3]यशायाह 54:1, 5-7; 62:5; यिर्मयाह 3:14; 31:32; यहेजकेल 16:8 भी देखें। [4]पुराने नियम में विवाह का रूपक आमतौर पर नकारात्मक संदर्भ में इस्तेमाल किया जाता था। इस्राएल अपने आत्मिक पति यहोवा के प्रति बेवफ़ा थे। नये नियम में इस संकेत का इस्तेमाल अधिक सकारात्मक में किया गया है। [5]संगति का संदेश देता भोजन का संकेत प्रकाशितवाक्य 3:20 में इस्तेमाल किया गया था। [6]मैं अमेरिका की परम्पराओं से कुछ तुलनाएं करूंगा। आप यहां पर अपने इलाके में विवाह से सम्बन्धित परम्पराओं और ऐसी समानाताओं को बता सकते हैं। [7]मंगनी के बाद आमतौर पर भावी दूल्हे और दुल्हन के माता-पिता के बीच उनके बहुत छोटे होने पर प्रबन्ध किए जाते थे। [8]देखें KJV. [9]प्रबन्धों तथा विवाह के भोज के बीच समय के अन्तराल का संकेत दस कुंआरियों वाले दृष्टांत में मिलता है (मत्ती 25:1-13)। [10]विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 215.

[11]आमतौर पर विवाह के वस्त्र बुलाए गए उन मेहमानों को दिए जाते थे, जिनके पास नहीं होते थे। मत्ती 22:11, 12 के दृश्य से इस परम्परा की कल्पना की जाती है; वह व्यक्ति स्पष्ट रूप से बिना विवाह के कपड़े पहने था, परन्तु उसने उसे पहनना चुना नहीं। [12]मत्ती 22 और 25 में विवाह के भोज के यीशु के दृष्टांत उस समय की कुछ रीतियों पर प्रकाश डालते हैं। यदि आपके सुनने वाले दृष्टांतों के बारे में नहीं जानते तो आप उन पर चर्चा के लिए कुछ समय बिता सकते हैं। [13]शमूएल जे. स्टोन, ''द चर्च'ज़ वन फाउंडेशन,'' *सौंग्स आफ़ फेथ एंड प्रेज़,* संपा. आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1996). [14]प्रेरितों 2:47 के सम्बन्ध में, देखें KJV. 1 कुरिन्थियों 12:13 के सम्बन्ध में कलीसिया को देह कहा गया है (इफिसियों 1:22, 23)। [15]कइयों का मत है कि कलीसिया मसीह से तब तक ''ब्याही'' नहीं जा सकती जब तक वह वापस नहीं आता। इस प्रकार वे इस भ्रमित शिक्ष पर गलत निष्कर्ष निकालते हैं। वे मंगनी की प्रकृति को समझ नहीं पाते। कलीसिया अपनी स्थापना के समय से ही मसीह की दुल्हन है। [16]थॉमस एफ. टॉरेंस, द *अपोकलिप्स टुड* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 130. [17]आप संसार के अपने भाग में विवाह की विशेष तैयारियों कीबातें विस्तार से बता सकते हैं। [18]यदि अध्याय 19 वाली दुल्हन की पहचान पर अभी भी किसी को संदेह है तो आयत 8 से यह बात साफ हो जानी चाहिए। दुल्हन विवाह का वस्त्र पहनती है, परन्तु यह वस्त्र पवित्र लोगों के धर्म के कामों को कहा गया है; इसलिए दुल्हन=पवित्र लोग। यह केवल यह कहने का एक और ढंग है कि दुल्हन कलीसिया (उद्धार पाए हुए लोगों की मण्डली) है। [19]यह अध्याय 17 वाली पाप से भरी वेश्या के भड़कीले वस्त्र से उलट है। वेश्या और दुल्हन में कई अन्तर

किए जा सकते हैं। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशिवाक्य, 2'' में ''जब बाबुल आपको फुसलाने की कोशिश करे'' पाठ देखें। [20]आयत 8 की तुलना 6:11 से करें।

[21]''धर्म के काम'' यूनानी भाषा के एक ही शब्द का अनुवाद है जो ''धार्मिकता'' के लिए शब्द का बहुवचन है। ''धार्मिकता'' भद्दा अनुवाद होगा। अधिकतर अनुवादकों का विचार है कि ''धर्म के काम'' या ''धर्मी कार्य'' मूल धर्मशास्त्र के अर्थ को सही रीति से व्यक्त करता है। (KJV में ''righteousness'' [एकवचन] है, परन्तु NKJV में ''righteous acts'' है।) विवाह के वस्त्रों से सम्बन्धित एक और आयत 22:14 में मिलती है, जो कहती है, ''धन्य हैं वे जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, ...'' हमारे वस्त्र यीशु के लहू में धोए जाते हैं परन्तु हमें भरोसे और आज्ञापालन के द्वारा ''उन्हें धोना आवश्यक है।'' [22]राबर्ट, माउंस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिगिशन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 340. [23]एच. एल. एलिसन, *1 पीटर–रैवलेशन,* स्क्रिप्चर यूनियन बाइबल स्टडी बुक्स सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1969), 83. [24]हैनरी बी. स्वेट, *द अपोकलिप्स ऑफ़ सेंट जॉन* (कैंब्रिज: मैकमिलन कं., 1908; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 247. [25]बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रैवलेशन* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 443. [26]बोलने वाले की पहचान के बारे में अन्य विचार दिए गए हैं जिनमें यह विचार भी है कि वह स्वर्ग में विश्वासी शहीदों में से एक था। संदर्भ में स्वर्गदूत अधिक मेल खाता है, परन्तु बोलने वाला चाहे जो भी था, बात वही है कि वह यीशु या यहोवा *नहीं* था। इसलिए उसे दण्डवत नहीं किया जाना चाहिए था। [27]फिर हमें याद दिलाया जाता है कि यूहन्ना सभी या दर्शनों के कुछ भागों और प्रकाशितवाक्य की शिक्षाओं को इकट्ठे लिख रहा था जो प्रकट की जा रही थीं (1:11, 19; 2:1; 10:4; 14:13; 21:5)। [28]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''तूफ़ान से ऊपर उठना'' में 7:14ग पर नोट्स देखें। हमें सुसमाचार सुनाकर ''निमन्त्रण दिया गया'' है। (देखें 1 कुरिन्थियों 1:9; 2 थिस्सलुनीकियों 2:14.) यह देखने के लिए कि निमन्त्रण की उपेक्षा करने के बारे में प्रभु का क्या विचार है, देखें मत्ती 22:1–14. [29]अध्याय 12 में हमें इससे मेल खाती परिस्थिति मिली थी, जहां हमने स्त्री को कलीसिया के रूप में पहचाना था, परन्तु उसके बच्चों को कलीसिया के लोगों के रूप में भी पहचाना था। [30]ये टीकाकार फिर अन्य लोगों को बुलाए हुए लोगों के रूप में पहचानने की कोशिश करते हैं। एक लेखक ने तो इस तथ्य के बावजूद के परिभाषा से ही कलीसिया=यीशु के लहू के द्वारा उद्धार पाए हुए लोगों की मण्डली है, ''उद्धार पाए हुए जो कलीसिया के लोग नहीं हैं'' के रूप में मेहमान तक कह दिया था। (देखें प्रेरितों 20:28; इफिसियों 5:23, 25.)

[31]कइयों ने इन शब्दों की व्याख्या यह प्रमाण देने के लिए करने का प्रयास किया है कि प्रकाशितवाक्य की भाषा को अक्षरश: लिया जाना चाहिए, परन्तु ''सच'' अपने आप ही ''मूल'' जैसा नहीं हो जाता। हैनरी स्वेट ने लिखा है, ''निश्चय ही यथार्थता के दावे के लिए इन विवरणों के अक्षरश: पूरा होने में विश्वास की आवश्यकता नहीं है। अपोकलिप्टिक भविष्यवाणी के अपने ही ढंग है और व्याख्या के अपने नियम हैं और छात्र को इनकी ही अगुआई में चलना चाहिए'' (स्वेट, 248)। [32]वास्तव में यह पूरी बाइबल के लिए कहा जा सकता है। [33]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 221. [34]माइलक विल्कोक, *आई सॉ हैवन ओपन्ड: द मैसेज़ ऑफ़ रैवलेशन,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1975), 173. [35]मूलत: बोलने वाले ने कहा, ''मैं साथी गुलाम हूं।'' [36]हमने पहले प्रकाशितवाक्य (1:2, 9) में ''यीशु की गवाही'' अभिव्यक्ति देखी है। इसका अर्थ ''यीशु *के बारे में* गवाही'' या ''यीशु *की ओर से* गवाही'' हो सकता है। दोनों शब्द मूल रूप में ''सुसमाचार'' के पर्यायवाची हैं। [37]अगला वचन ''यीशु की गवाही'' के साथ ''भविष्यवाणी'' (परमेश्वर की प्रेरणा से शिक्षा) को मिलता है, जिस कारण कइयों का मत है कि इस आयत में ''जो यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं'' विशेष रूप से यूहन्ना और सामान्य अर्थ में परमेश्वर की प्रेरणा पाए अन्य प्रेरितों के लिए है। हो सकता है; परन्तु यही शब्दावली सामान्य विश्वासी मसीहियों की बता करने के लिए 12:17 में इस्तेमाल की गई थी और सम्भवतया यहां इसका वही अर्थ है। जैसा भी हो मुख्य बात

बदलती नहीं है कि परमेश्वर के बिना किसी और को दण्डवत न किया जाए। [38]पाठकों को शायद यह भी जानना आवश्यक था कि उन्हें स्वर्गदूतों की पूजा नहीं करनी चाहिए (कुलुस्सियों 2:18)। [39]यदि स्वर्गदूतों की पूजा नहीं की जानी चाहिए थी तो वे नश्वर मनुष्यों से कितने कम होने चाहिए! (प्रेरितों 10:25, 26; 14:11-18!) [40]यह आयत अप्रत्यक्ष रूप से साबित करती है कि यीशु परमेश्वर है: केवल परमेश्वर की ही आराधना की जानी चाहिए; परन्तु पृथ्वी पर रहते समय यीशु ने दण्डवत स्वीकार किया था (यूहन्ना 9:35-38)। यीशु की बात करते हुए इब्रानियों 1:6 कहता है, "परमेश्चवर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत करें।" दण्डवत क्योंकि केवल परमेश्वर को ही किया जाना चाहिए, यीशु परमेश्वर (यानी ईश्वरीय) ही होना चाहिए।

[41]*अमेरिकन हैरिटेज डिक्शनरी,* तीसरा संस्क., एस.वी. "स्पिरिट।" [42]आयत 10 के अन्तिम भाग की कई व्याख्याएं हो सकती हैं। (आधुनिक अनुवादों से तुलना करें।) कई लोग "आत्मा" का अनुवाद यीशु के बारे में प्रकाशन के पवित्र आत्मा के भाग पर ध्यान देते हुए पवित्र आत्मा के अर्थ में करते हैं। कई "आत्मा" की जगह "प्रेरणा" शब्द लगा लेते हैं। "आत्मा" शब्द का अनुवाद "हवा" या "श्वास" दोनों हो सकता है। जिस कारण कइयों का मानना है कि यीशु के बारे में गवाही परमेश्वर की प्रेरणा से दी शिक्षा के "जीवन का श्वास" है। आयत 10 के शब्दों का अर्थ जो भी हो ज़ोर "यीशु" शब्द पर है और निष्कर्ष वही है कि ऊंचा *यीशु* को ही किया जाना चाहिए। [43]ध्यान दें कि स्वर्गीय विवाह के बारे में भी यीशु को ही ऊंचा किया जाता है। सांसारिक विवाह आमतौर पर दूल्हे के इर्द-गिर्द रहता है, परन्तु यह विवाह "*मेमने* का विवाह" है (आयत 7)। [44]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करते हैं तो सुनने वालों को तुरन्त वचन को मानने के लिए प्रेरित करें। [45]माइलो हैडविन, *द ओवरकमर्स: सरमन्स ऑन रैवलेशन* (आर्लिंग्टोन, टैक्सस: मिशन प्रिंटिंग, तिथि नहीं), 195-203. [46]मायर पर्लमैन, *विंडोज़ इन टू द फ़्यूचर: डिवोशनल स्टडीज़ इन द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (स्प्रिंगफील्ड, मिज़ोरी: गास्पल पब्लिशिंग हाउस, 1941), 153-57.

## विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. परमेश्वर और मनुष्य के बीच सम्बन्ध को दिखाने के लिए पुराने और नये नियमों में इस्तेमाल किए गए विवाह के संकेत पर चर्चा करें। पौलुस की शिक्षा कि कलीसिया मसीह की दुल्हन है, पर विशेष ध्यान दें।
2. कलीसिया मसीह की दुल्हन है तो प्रभु की कलीसिया का सदस्य होना कितना आवश्यक है?
3. भोजन का संकेत आनन्द करने या जश्न के रूपक के रूप में कैसे इस्तेमाल किया गया है?
4. कपड़े पहनने का रूपक किस प्रकार व्यवहार में बदलाव का सुझाव देता है?
5. सगाई और मंगनी और विवाह समारोह के बीच के समय पर विशेष ध्यान देते हुए यहूदी विवाह की रीतियों पर चर्चा करें।
6. किसी आनन्द भरे विवाह समारोह के बारे में बताएं जिसमें आपने भाग लिया हो। उस आनन्द भरे अवसर को यीशु में हमारे सम्बन्ध को कैसे देखा जा सकता है?
7. क्या विवाह के वस्त्र का चयन आमतौर पर दुल्हन की अपने विवाह की तैयारी का आवश्यक भाग होता है? यहां वचन कहता है कि दुल्हन को चमकदार, शुद्ध मलमल पहनाई गई थी। आप इस अर्थ के बारे में क्या सोचते हैं?
8. हमारे "जीवन वस्त्र" कैसे साफ किए जाते हैं? क्या हमारे जीवनों को शुद्ध *रखना*

भी आवश्यक है ?

9. हमारे पाठ में दोहरे संकेत का सुझाव है: दुल्हन कलीसिया है और बुलाए हुए मेहमान कलीसिया के लोग हैं। क्या प्रकाशितवाक्य में पहले ऐसा दोहरा संकेत आया है।
10. विवाह के भोज में बुलाए हुए लोग ''धन्य'' कैसे हैं ? क्या बुलाया जाना ही काफी है या हमें निमन्त्रण को *स्वीकार* भी करना चाहिए ?
11. आपको क्या लगता है कि यूहन्ना स्वर्गीय प्रवक्ता को दण्डवत करने के लिए उसके सामने क्यों झुका ? (यह प्रश्न केवल विचार के लिए है सही या गलत उत्तर किसी का नहीं होगा।)
12. क्या हमें स्वर्गदूतों की पूजा करनी चाहिए ? क्या हमें महत्वपूर्ण धार्मिक अगुओं के सामने झुकना चाहिए ? क्यों ?
13. ''क्योंकि यीशु की गवाही भविष्यवाणी की आत्मा है'' वाक्य के कुछ सम्भावित अर्थों पर चर्चा करें।

**मेमने के विवाह के भोज (19:7-9)**